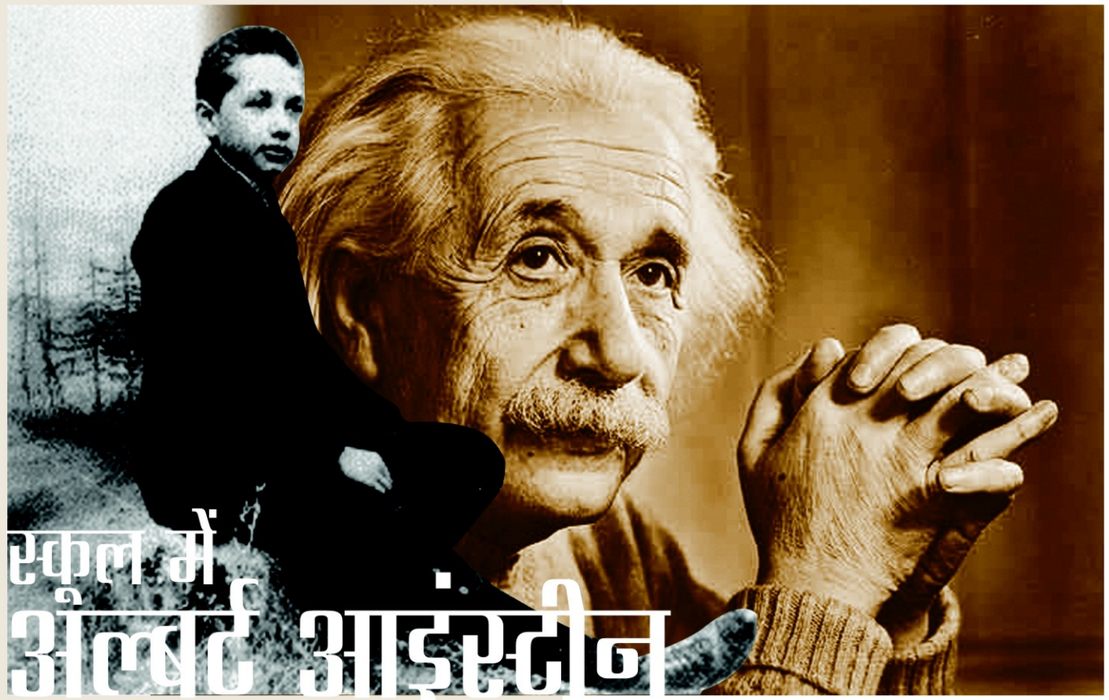

स्कूल में अल्बर्ट आइंस्टीन

"वॉटरलू की लड़ाई में ईरान ने फ्रांस को किस सन् में हराया था?" इतिहास के टीचर ने अल्बर्ट आइंस्टीन से पूछा।

"मुझे नहीं मालूम, सर।" आइंस्टीन ने जवाब दिया।

"तुम्हें क्यों नहीं मालूम? तुम अक्सर यही जवाब देते हो।"

"मैं जवाब भूल गया, सर।"

"तुमने कभी कुछ याद करने की कोशिश भी की है?" टीचर ने फिर झिड़का।

"नहीं, सर।" अल्बर्ट ने हमेशा की तरह साफ-साफ कहा। "क्योंकि तारीखों को याद रखने में मुझे कोई तुक नज़र नहीं आती। अगर किसी को तारीखें देखनी ही हैं तो वह किताबों में देख सकता है।"

मिस्टर ब्रान कुछ देर के लिए अवाक रह गए। "ताज्जुब है...। अगर ऐसा है तो फिर हर चीज़ किताब में देखी जा सकती है। फिर तुम दूसरी चीज़ें भी क्यों सीख रहे हो? उन्हें भी किताब से देख सकते हो?"

"हाँ, सर।"

"यानी तुम्हें तथ्य याद रखने लायक नहीं लगते?"

"बिल्कुल सर।" अल्बर्ट ने जवाब दिया।

"यानी, पढ़ाई-लिखाई में तुम्हारा बिल्कुल विश्वास नहीं है?"

"असल में मैं तथ्यों को शिक्षा मानता ही नहीं।"

अल्बर्ट का यह जवाब सुन टीचर मिस्टर ब्रान ने ताना मारते हुए कहा, "तो क्या तुम क्लास को अपना - आइंस्टीन का सिद्धान्त - बताने की कृपा करोगे?"

अल्बर्ट सन्न था, "मुझे लगता है कि इसे याद रखने का कोई मतलब नहीं है कि किस लड़ाई में किस सेना ने ज़्यादा लोगों को मारा। मेरी रुचि तो यह जानने में होगी कि ये सैनिक एक-दूसरे को मारना क्यों चाहते थे।"

"बस, बहुत हो चुका।" मिस्टर ब्रान की आँखें गुस्से से लाल हो गई थीं। "हमें तुमसे कोई भाषण नहीं सुनना है, आइंस्टीन। तुम स्कूल के लिए एक कलंक हो। मुझे तो यह समझ में नहीं आता कि तुम स्कूल आते ही क्यों हो।"

"मुझे भी यहाँ आने का कोई शौक नहीं है, सर।" अल्बर्ट ने जवाब दिया।...

दोपहर की छुट्टी हो चुकी थी। अल्बर्ट दुखी मन से घर जा रहा था। वह इसलिए दुखी नहीं था कि आज का दिन खराब गया। अक्सर ऐसा ही होता था। उसे दुख तो इस बात का था कि कल सुबह फिर उसे इसी जगह आना होगा। वह तो हमेशा यही प्रार्थना करता रहता था कि उसके पिता उसे इस स्कूल से निकाल लें।

क्लास में अल्बर्ट का सबसे अच्छा दोस्त यूरी था। वह यूरी से अपनी हर परेशानी बाँटता था। इतिहास के शिक्षक वाली बात भी उसने उसे बताई, "मुझे नहीं लगता कि मैं डिप्लोमा की यह परीक्षा कभी पास कर पाऊँगा। मुझे यहाँ से चले जाना चाहिए। मैं अपने पिता का पैसा और दूसरों का समय दोनों ही बरबाद कर रहा हूँ। इससे अच्छा तो यही होगा कि मैं अपनी पढ़ाई यहीं रोक दूँ।"

"फिर तुम क्या करोगे?" यूरी ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। अगर मैं मिलान (इटली का एक शहर) जाता हूँ तो मुझे डर है कि मेरे पिता मुझे यहाँ वापस भेज देंगे, लेकिन अगर....।" अचानक अल्बर्ट को एक आइडिया आया। उसने यूरी से पूछा, "तुम किसी डॉक्टर को जानते हो?"

"हाँ, लेकिन क्यों?" यूरी अचरज में था।

"अगर कोई डॉक्टर कह दे कि मुझे नर्वस ब्रेकडाउन हो गया है और मेरा स्कूल जाना ठीक नहीं है। मुझे स्कूल से दूर रहना चाहिए तो...तो शायद काम बन जाए!"

"मुझे लगता है कि इसे याद रखने का कोई मतलब नहीं है कि किस लड़ाई में किस सेना ने ज़्यादा लोगों को मारा। मेरी रुचि तो यह जानने में होगी कि ये सैनिक एक-दूसरे को मारना क्यों चाहते थे।"

"मुझे नहीं लगता कि कोई भी डॉक्टर ऐसा कहेगा।" यूरी ने आशंका जताई।

"हमें कोशिश तो करनी चाहिए। हमें एक ऐसा डॉक्टर तलाशना चाहिए जो दिमागी बीमारियों का विशेषज्ञ हो।"

"ऐसे बहुत से डॉक्टर मिल सकते हैं। लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे नर्वस ब्रेकडाउन की बात कहें ही।" यूरी ने फिर आशंका जताई...। अचानक यूरी चहका, "निराश मत हो, मैंने तुम्हारे लिए एक डॉक्टर ढूँढ लिया है।"

"उनसे कब मिल सकते हैं?" अल्बर्ट का चेहरा खिल उठा।

"कल! यह रहा उनका पता।" यूरी ने अल्बर्ट के हाथों में कागज़ का एक टुकड़ा थमा दिया। "मैं अर्न्स्ट को बरसों से जानता हूँ, लेकिन वह मूर्ख नहीं है।" यूरी ने अल्बर्ट को चेताते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब क्या है?" अल्बर्ट ने कहा।

"तुम उसकी आँखों में धूल झोंकने की कोशिश मत करना, बस। उसके साथ खुलेपन से पेश आना। उस पर यह मत ज़ाहिर होने देना कि तुम किसी को धोखा देने जा रहे हो।" यूरी ने कहा।

अल्बर्ट का अगला सारा दिन यही सोचने में गुज़र गया कि वह डॉक्टर से कहेगा क्या।

"डॉक्टर, मैं वाकई नहीं जानता कि अपनी समस्या कैसे बताऊँ?" मिलते ही अल्बर्ट ने कहा।

"इसकी ज़रूरत भी नहीं है। यूरी ने मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है।" डॉ. वेल ने दोस्ताना अन्दाज़ में कहा।

"उसने क्या कहा?"

"यही कि मैं लिख दूँ कि तुम्हें नर्वस ब्रेकडाउन है और तुम्हें स्कूल नहीं जाना चाहिए।"

अल्बर्ट का चेहरा लटक गया। "यूरी को आपसे यह सब नहीं कहना चाहिए था।"

"क्यों नहीं? क्या यह सच नहीं है?"

"हाँ, यही तो परेशानी है।" अल्बर्ट बोला।

"ऐसा नहीं है। मैं जानता हूँ कि अपने स्कूल को लेकर तुम वाकई बहुत नर्वस हो।"

"मगर मैंने तो इस बारे में आपसे कुछ नहीं कहा। फिर आप कैसे जानते हो?"

"क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो तुम मुझसे मिलने नहीं आते।" डॉक्टर ने आगे कहा, "यदि मैं यह साबित कर दूँ कि तुम्हें नर्वस ब्रेकडाउन हुआ है और तुम्हें कुछ समय के लिए स्कूल नहीं जाना चाहिए तो तुम क्या करोगे?"

"मैं इटली चला जाऊँगा। मिलान में मेरे माता-पिता रहते हैं।" अल्बर्ट ने कहा।

"वहाँ जाकर क्या करोगे?"

"किसी कॉलेज या संस्थान में प्रवेश लेने की कोशिश करूँगा।"

"तुम बिना डिप्लोमा किए किसी भी संस्थान में प्रवेश कैसे ले सकते हो?"

"मैं अपने गणित के शिक्षक से बात करूँगा कि वे मेरे काम को लेकर एक प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) दे दें। मैं उनसे वह सारा गणित सीख चुका हूँ जो उन्होंने स्कूल में पढ़ाया है, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा ही।"

डॉक्टर वेल अब भी उसकी ओर सन्देहभरी नज़रों से देख रहे थे। "तुम बताओ, कितने दिन तुम स्कूल से दूर रहना चाहोगे? छह माह का सर्टिफिकेट पर्याप्त रहेगा?"

"आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।" अल्बर्ट बोला।

वेल ने सर्टिफिकेट देते हुए कहा, "बेस्ट ऑफ लक।"

(पैट्रिक प्रिंगले के लेख "द यंग आइंस्टाइन" से साभार)